आज का पुरुषार्थ 28 May 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहने का पुरुषार्थ करे, सरलता पवित्रता स्वच्छता और सादगी से जीवन को भरपूर करे "*

इस अलौकिक जीवन की सुन्दरता **त्याग** और **वैराग्य** में समाई हुई है। बहुत मान-शान, ठांट-वांट में रहना यह spiritual life नहीं होती।

जहाँ simplicity है और greatness है वही spirituality की झलक मिलती है। इसलिए हम अपना बहुत सारा समय दैहिक बनावट में, दैहिक श्रृंगार में, देह के पीछे न लगाये।

हमारा जीवन **सादगी** से और **त्याग वैराग्य** से भरा हुआ हो। पहले जीवन में आता है वैराग्य। और वैराग्य automatically हमें त्यागी बना देता है।

और जहाँ त्याग श्रेष्ठ होता है वहाँ **तपस्या** स्वतः ही सहज रूप से चलने लगता है। तो हम सभी वैराग्य धारण करे। और वैराग्य का मूल है कि ..

" यह 84 जन्मों का खेल पूरा हुआ .. अब मुझे सबकुछ यही छोड़कर .. बाबा से भरपूर होकर .. मैं मेरे और मेरा सबकुछ छोड़कर .. वापिस बाबा के साथ अपने धाम चलना है "

" इस संसार में जो कुछ दिखाई देता है, कुछ ही समय के बाद यहाँ कुछ भी नहीं रहेगा .. और फिर होगा देवताओं का आगमन "

इस feeling के द्वारा हम वैराग्य को धारण करे। हम वैराग्य धारण करे इस फीलिंग के द्वारा कि ...

इस संसार की सभी वस्तुएं, वैभव, प्राप्तियाँ, सुखों के साधन विनाशी है। ठीक है, यह जीवन में ज़रूरी है। इनसे जीवन में सुख मिलता है। इनसे जीवन सहज बनता है।

लेकिन इनका प्रयोग करते हुए इनके आसक्ति से हम परे रहे। यह है वैराग्य। वैराग्य का अर्थ सुखापन नहीं कि ...

" हम हँसे नहीं .. हम अच्छे भोजन न खाये .. हम अच्छे वस्त्र न पहनें "

... हम इन सब साधनों का उपयोग करते हुए इनसे ऊपर रहे कि, यह सब यहाँ जीने के मात्र साधन है, यह रीयल लाइफ नहीं है।

Royal Life तो योगी लाइफ है। ऐसे चिन्तन के द्वारा हमारे चित में वैराग्य की भावना नेचुरल स्वरूप लेती जायेंगी।

ऐसा नेचुरल स्वरूप बनता जायेगा जैसे यहाँ कहीं भी हम अटके हुए नहीं है। सारे किनारे हम छोड़ चुके है।

और इस वैराग्य से automatically त्याग भावना जागृत हो जाती है। त्याग से जीवन में तेज आता है और यह तेज दुसरों को बाबा की ओर आकर्षित करता है।

जिन्होंने **पवित्रता** को अपना लिया है उन्हें त्यागी होना ही चाहिए। क्योंकि पवित्रता, सादगी और त्याग वृत्ति तीनों का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध है।

एक पवित्र आत्मा अगर सांसारिक वैभवों की ओर झुकीं रहती है तो उसका देहभान बढ़ता जायेगा और उसे कभी भी **प्योरीटी** एक वल के रूप में अनुभव नहीं होगी।

उसके मनमें निगेटिव feelings चलेंगी, देह के तरफ आकर्षण रहेगा, और **पवित्रता का सुख** ऐसी आत्मा को प्राप्त नहीं होगा।

तो हम त्याग वृत्ति बनाये। जो चीज़ हमारे मार्ग में बाधक हो, जो चीज़ हमारे मन को भटकाती हो, जो हमें **योगयुक्त** रहने में बांधा डालती हो, जो हमारे श्रेष्ठ स्थिति और उमंग उत्साह की स्थिति को नष्ट करती हो उसका पल भर में त्याग करने की हमारे अंदर शक्ति भी रहे। और हम मन से उसके लिए तैयार भी रहे।

तो यह त्याग और वैराग्य हमें आध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ ऊँचाई पर ले चलेगा। हमें अपने जीवन में, अपने आस-पास त्याग की लहर अवश्य फैलानी है। वैराग्य की लहर अवश्य फैलानी है।

क्योंकि यह लहर प्रायः लोप होती रहती है। और इस लहर की लोप होने से मनुष्य का झुकाव संसार की ओर संसार के पदार्थो में आसक्त होने लगता है।

जो कुछ इन आंखो से दिखाई देता है, वह कुछ ही समय में समाप्त हो जायेगा। और अब समय आ गया है, हमें यह सब कुछ छोड़कर वापिस घर जाना है।

तो अभ्यास करेंगे ...

" मैं आत्मा .. इस देह से निकलकर .. वापिस अपने घर जा रही हूँ "

" बाबा को टच किया .. थोड़ी देर उसके पास रहकर .. नीचे आ रही हूँ "

" मैं आत्मा .. देव स्वरूप धारण कर लेती हूँ "

आना और जाना .....

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org